~~बादि~~ वाजिद अली शाह

1846 - 1856 ई०

- 1852 ई० में सैयद आगा हसन अमानत ने 'इंदर सभा' नाटक ~~लिखा~~। इसी काल में लिखा
- दरबार में गायक - अहमद खाँ, ताज खाँ, गुलाम हुसैन खाँ, दुल्ली खाँ — गायिका - जोहरा, मुश्तरी, हैदरी, मुहम्मद जी अच्छे तबला वादक थे।
- उनके दरबारी नर्तक ठाकुर प्रसाद व गोर्द दुर्गा प्रसाद,
- वाजिद अली शाह ने ~~उन्होंने~~ अख्तर उप नाम से अनेक सादरे, ख्याल, ठुमरियों और गजलों की रचना की।
- जैसे - खमाज का सादरा - सुध बिसर गई आज अपने गुनन की
  बहार का ख्याल - फूलवाले कत मैंना गुडवा मोल लेंदे रे
  भैरवी की ठुमरी - बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाये
- वाजिद अली नृत्य-गीत और नाट्य विशारद थे।
- उनके समय लखनऊ में पूर्वी ठुमरी, पछाँवा ठुमरी, धनाश्री ठुमरी का चलन देखा जाता था।
- सनद पिया, चाँदशा प्रभृति एवं कथक नर्तकों इस प्रकार की ठुमरी गाते थे।
- फलस्वरूप परवर्तीकाल में होली इत्यादि के गान ठुमरी नाम से प्रचलित हो गये।

उन्होंने ठुमरी में भावाभिव्यंजना के लिए भाषा के छोटे-छोटे वाक्यांशों को लिया गया। इस प्रकार कदन-ठुमरी का जन्म हुआ।

- वाजिद अली ने अपने को 'अख्तर पिया' नाम से परिचित कराया

- 1841-42 में यह 'कदन ठुमरी' बनारस और पूर्वी अंचलों में काफी प्रचारित हुई थी।

- उस समय कुतुबदौला अच्छे सितार वादक थे।
प्यारे खाँ, जाफर खाँ, हैदर खाँ, बासत खाँ - गायक थे।
छोटे और बड़े, मुन्ने खाँ अच्छे तबला वादक थे।

- अंतिम सम्राटों में अहमदशाह के दरबार में सुरंगावन और आलम, खुपदकार थे।

- संगीतज्ञ विभिन्न ~~रियासत~~ रियासतों में बस गये
अतः संगीत अब रामपुर, अवध, पटियाला, हैदराबाद, बनारस आदि शहरों में केन्द्रित हो गया।